International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 5; September 2018; Page No. 44-46

विश्व पुस्तकालय की प्रथम रचना के रूप में ऋग्वेद का ऐतिहासिक एवं सामाजिक महत्व

डॉ0 दुर्गेश कुमार सिंह
प्राचार्य, स्वतंत्र गर्ल्स डिग्री कालेज, लखनऊ विश्वविद्यालय, (लखनऊ), भारत।

सारांश
वेद शब्द संस्कृत की विद् धातु से बना है जिसका अर्थ है जानना। वेद शब्द का सामान्य अर्थ है ज्ञान। वस्तुतः वेद से ताप्पर्य चार प्राचीन ग्रन्थों से है जो ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्व वेद हैं। डॉ0 लाल के अनुसार – "वेद वे हैं जिनमें सब उत्तम ज्ञान विद्यमान है, जिनके द्वारा सब कुछ जाना, विचार व प्राप्त किया जा सकता है।" यों तो वेद चार हैं परन्तु प्राचीन परम्परा के अनुसार कुछ ऐसी मान्यता प्रसिद्ध है कि प्रथम एक ही वेद था, जिसे बाद में जाकर लोगों के पठन की सुविधा की दृष्टि से चार भागों में विभक्त कर दिया गया। भारतीय परम्परा के अनुसार वैदिक ज्ञान नित्य है एवं सृष्टि की रचना के आदि में ईश्वर ने वेदों की रचना की। वेदांत दर्शन के अनुसार वेद अनादि तथा अपौरूमय (किसी पुरूष के द्वारा न रचित) ज्ञान है जो प्रलय के बाद भी बना रहता है एवं सृष्टि के आदि में पुनः ईश्वर के द्वारा आविर्भूत होता है। आधुनिक युग में एक सुखद प्रवृत्ति का उद्भव हुआ है वैज्ञानिक दृष्टि से वेदों का अध्ययन। यद्यपि वेद विज्ञान की पुस्तकें नहीं है नहीं उनमें विज्ञान के सिद्धांतों को खोजा जा सकता है किन्तु फिर भी विज्ञान उनमें के सिद्धान्तों को खोजा जा सकता है किन्तु फिर भी विज्ञान की विभिन्न शाखाओं भौतिकी, गणित, आयुर्विज्ञान, वनस्पतिशास्त्र आदि की दृष्टि से वेदों का अध्ययन हुआ है। पं0 मधुसूदन ओझा, गिरिधर शर्मा व चतुर्वेदी आदि विद्वानों ने वेदों में निहित वैज्ञानिक तथ्यों का अध्ययन किया है।

मूल शब्द : सूक्त, ऋचायें, प्रमुख देवता, स्तुतियां, आहुति, धर्म।

प्रस्तावना
विश्व पुस्तकालय की प्रथम रचना होने के कारण मानव के इतिहास का प्रश्न हो या विश्व के इतिहास की बात सभी उत्तरों के लिए 'ऐतिहासिक विद्वानों' को ऋग्वेद से ही प्रारम्भ करना होगा। भारतीय इतिहास के सम्बन्धों में भी यहीं कहा जा सकता है। वास्तव में उस सुदूर काल के इतिहास के परिज्ञान के लिए हमारे पास और कोई विश्वासनीय साधन है भी नहीं। सप्त सैंधव प्रदेश का इतिहास, भूगोल, पर्वतों, नदियों, दाशराज्ञ युद्ध विभिन्न राजाओं और जनसमूहों के विषय में वेदों में असीम सामग्री संचित है। गुजरात और हरियाणा के कई स्थानों पर की गई खुदाई के अवशेषों से सिद्ध होता है कि सिंधु घाटी की सभ्यता और वैदिक सभ्यता में अभिन्नता थी।

ऋग्वेद की इक्कीस शाखाएं मानी जाती है परन्तु अब उनमें से केवल दो–बाष्कल और शाकल शाखाएं ही उपलब्ध हैं। इनमें से भी पूर्ण रूप में तो केवल शाकल शाखा ही उपलब्ध है और वहीं प्रचलित भी है। ऋग्वेद ऋचाओं का वेद है। इसमें जो मंत्र संग्रहित है, उन्हें ऋचा या ऋचायें कहते है। छंदोंबद्ध या पद्यबद्ध मंत्रों का ऋचा कहा जाता है। संहिता शब्द का अर्थ होता है संग्रह, इस प्रकार ऋचाओं का संग्रह ही ऋग्वेद संहिता है। इस ग्रन्थ में कुल 10552 ऋचाएं हैं जो कि 1028 सूक्तों में विभक्त हैं। प्रायः एक–एक देवता या विषय को समर्पित थोड़ी–थोड़ी ऋचायें अलग–अलग सूक्तों के अन्तर्गत संग्रहित हुई है। ये कुछ सूक्त मिलकर मण्डल बनाते हैं। ऋग्वेद में कुल 10 मण्डल हैं। ऋचाओं के शब्दों की संख्या 153826 है तथा अक्षरों की संख्या 432000 है। ऋग्वेद एक काल और एक वेद की रचना नहीं है अपितु यह क्रमशः विकसित एवं संचित एक विशाल ज्ञान राशि है। जिसकी निर्माण प्रक्रिया में शताब्दियों की अवधि लगी है तथा अनेक भारतीय मनीषियों ने अपने चिंतन को अभिव्यक्ति देकर इसकी रचना में सहयोग दिया है।

विवेचना
ऋग्वेद की विषयवस्तु एवं महत्वपूर्ण सूक्त
घाटे महोदय ने ऋग्वेद सूक्तों को धार्मिक, धर्मानिरपेक्ष, लौकिक एवं दार्शनिक सूक्तों के रूप में वर्णित किया है। पाश्चात्य विद्वान विंटरनिट्ज ने सूक्तों की विषयवस्तु का वर्गीकरण इस प्रकार किया है।

1. काव्यात्मक गीत
2. यज्ञीय स्त्रोत
3. दार्शनिक सूक्त
4. आख्यान सूक्त
5. ऐन्द्रजालिक सूक्त
6. धर्मनिरपेक्ष सूक्त
7. दान स्तुतियां
8. प्रहेलिकायें (ब्रह्मोद्यसूक्त)

1. काव्यात्मक गीत
धार्मिक दृष्टि से ऋग्वेद की प्राचीनता के महत्व के साथ उसके गीतों को भी काव्य कला की दृष्टि से विश्व साहित्य में प्रमुख स्थान प्राप्त है। सहज, सरल उपमायें, नाद–सौन्दर्य तथा छन्दों का लयात्मक निखार वैदिक कवि की विशेष उपलब्धियाँ है। सूर्य, उषस,

पर्जन्य तथा मरूत सूक्तों में विशेष रूप से अभिव्यक्त काव्य तत्व मानवमन को आज भी विभोर कर देता है।

"अवस्यमेव चिन्वती मद्योन्युषा याति स्वसारस्य पत्नी "
(ऋग्वेद 3.61.4)

2. यज्ञीय स्तोत्र

ऋग्वेद स्तुति का वेद है अर्थात् अलग–अलग देवों के विभिन्न रूपों की स्तुतियाँ ही वैदिक ऋषियों द्वारा की गयी है। ऋग्वेद की उपासना पद्धति में हमें एक आडम्बर रहित सामान्य स्तुति प्रार्थना रूप विधि के दर्शन होते है। यज्ञ के माध्यम से एक ओर वैदिक ऋषि पूर्ण समर्पण की भावना को अभिलक्षित करता है तो दूसरी ओर सारे वातावरण की शुद्धि तथा सर्वकल्याण की भावना को अभिव्यक्त करता है। परमेश्वर सबका मित्र है। वह सूर्य रूप में सब ओर अपनी आभा बिखेर रहा है। उसको घृत की उत्तम पदार्थ की आहुति अर्पित करों।

"मित्राय हव्यम् घृत वज्जु होत।"

3. दार्शनिक सूक्त

सृष्टि और सृष्टा के परस्पर सम्बन्ध को विवेचित करते हुए सृष्टा के लिए यहाँ प्रजापति, ब्रह्मणस्पति, वृहस्पति, विश्वकर्मा आदि कितने ही नाम है किन्तु यह देवाधिदेव सदा एक पौरूषेय ईश्वर के रूप में उपवर्णित है। दर्शन का मूल प्रश्न सृष्टि कहाँ से? किससे? आदि यहाँ उठाये गये हैं तथा उनके उत्तर देने की कोशिश की गयी है।

"को अदा वेद क इह प्रवोचतः,
कुतः आ जाता कुत इयं विसृष्टिः,
अर्वाग्देवा अस्य विसजनेनाऽथा,
को वेद यत आवभूव। " ऋग्वेद 10.129.6

पाश्चात्य विद्वान मैक्डोनल तथा वालिस के अनुसार पुरूष सूक्त विराट पुरूष शरीर से जगत की उत्पत्ति का विवरण प्रस्तुत करता है। एच0डी0 ग्रीसवार्ड के अनुसार परवर्ती एकेश्वरवाद "सर्व खलविदम् ब्रह्म" यह सब ब्रह्म ही है। उपनिषद के दर्शन का मूल इन्हीं सूक्तों में निहित है।

4. आख्यान सूक्त

आख्यान सूक्तों को संवाद सूक्त भी कहते है विद्वान सिल्वांलेवी ऋग्वेद में गद्य भाग में संग्रह न करने के सम्बन्ध में यह तर्क देते है कि ऋग्वेद में गद्य का संग्रह किया ही नहीं जा सकता था। श्रोडर तथा मैक्स मूलर का मत है कि यह सूक्त धार्मिक सम्प्रदाय में प्रचलित नाटकों के संवादों के खण्डित अंग हैं। डॉ0 विन्टरनिट्ज इन्हें प्राचीन लोकगीत काव्य (बैलेड) का नमूना मानते है। ये आख्यान सूक्त तीन हैं –

1. पुरूरवा –उर्वरी – (ऋग्वेद 10.95)
2. यमन्यमी संवाद – (ऋग्वेद 10.10)
3. सरमा – पाणी संवाद – (ऋग्वेद 10.130)

5. ऐन्द्रजालिक सूक्त

इन्हें जादू–टोना वाले सूक्त के रूप में देखा गया है। लोक तथा व्यवहार से सम्बद्ध ऐसे अनेक सुन्दर सूक्त ऋग्वेद में है। वैसे तो ऐसे विषय अथर्ववेद की वर्णवस्तु के अन्तर्गत आते है परन्तु ऋग्वेद के दशम् मण्डल में भी ऐसी लोक संस्कृति की झलक मिलती है। एक सूक्त में पत्नी के कष्ट को दूर कर पति को पाने का विवरण है।

"इमां खनाम्योषधिं वीरूधं बल वत्तमम्।
यय सपत्नीं बाधते यया संविन्दते पतिम्।।"

अर्थात् इस लता रूप अपने कार्य में अत्यंत बलवती औषधि को मैं खोदकर निकालती हूँ। जिससे सौत को दुःख दिया जाता है और जिससे पति के असाधरण प्रेम को पाया जाता है।

6. धर्म निरपेक्ष सूक्त

ऐसे कतिपय् सूक्त जिसका धर्म से किसी प्रकार सम्बन्ध नहीं होता और यह भौतिक प्रकृति के हैं। सोम सम्बन्धी स्रोतों में एक श्रमगीत (Labour song) मिलता है जो व्यंग्यात्मक है।

"कारूरहं ततो भिषगुपलप्रक्षिणी नना,
नानाधियो वसूयवाडनुमा इव तस्थिमेन्द्रायेन्दो परिसुवा।"

7. दान स्तुतियाँ

ऋग्वेद में लगभग 40 सूक्त दान स्तुति विषयक हैं, राजाओं स्तुतियों के अन्तर्गत पहले इन्द्र की स्तुति और फिर आश्रय दाताओं की प्रशंसायें की गयी हैं, कहीं–कहीं दान करने वालों के नाम तथा कर्मों का उल्लेख भी हुआ है। होल्डन वर्ग ने इन सूक्तों की आलोचना करते हुए कहा है कि यह पुरोहितों के द्वारा उच्च वर्ग की स्वार्थ सिद्धि हेतु दक्षिणा के लोभ में लिखा गया है किन्तु विन्टरनिट्ज ने इस मत का दृढ़ता से खण्डन किया है।

"मोघमंत्रम् विन्दते अप्रेचताः सत्यं ब्रवीमिवद् वर्धईत स तस्य,
नार्यमणं पुष्यति नो सखायं केवलाधो भवति केवलादी।"

अर्थात् मैं सत्य कहता हूँ कि उस कृपण अदाता की सम्पत्ति अन्न अर्थात् भोग साधन व्यर्थ ही है जो न देवों को हवि अर्पण करता है और न अपने समान पौष्य मित्र को देता है केवल स्वयं खाता है वह केवल पाप ही प्राप्त करता है।

8. प्रहेलिकायें

प्रहेलिका को अंग्रेजी में (Riddle) कहते है। ऋग्वेद के अन्तर्गत कतिपय् मंत्र इस प्रकार हैं कि उनमें किसी साधारण बात को भी रूपकात्मक ढ़ंग से व्यक्त किया गया है। इन मंत्रों में बौद्धिक क्रीड़ा विशेष रूप से दृष्टव्य है। ऋग्वेद में विभिन्न देवताओं का वर्णन उनकी विशेषताओं के साथ किया गया है परन्तु उनके नाम अकथित और अनुक्त है।

"त्रीण्येकं उरूगायों विचक्रमे, यत्र देवासो मदन्ति"

इसमें विष्णु के सम्बन्ध में कहा गया है।

"सदो द्वा चक्र ते उपमा दिवि सम्राजा सर्पिरासुती,"

यहाँ मित्रावरूण दो देव अभिप्रेत हैं।

ऋग्वैदिक धर्म और उसके लक्षण

ऋग्वेद को हिन्दू धर्म का आदि धर्म माना जाता है। हिन्दुओं के सभी धार्मिक कृत्यों में युगों से लेकर आज तक ऋग्वेद के मंत्र

शामिल रहे हैं परन्तु ऋग्वैदिक धर्म को जाति विशेष के घेरे में आबद्ध नहीं किया जा सकता है क्योंकि यह देश काल की सीमाओं को अतिक्रमण करके सम्पूर्ण विश्व का, सम्पूर्ण मानवता का धर्म है। ऋग्वैदिक धर्म जीवन के शाश्वत् मूल्यों की स्थापना और उनको जीवन में उतारने की प्रेरणा देता है। महाभारत के अनुसार –

"धारणाद धर्म इत्याहुर्धर्मो धारयते प्रजाः,
यः स्याद् धारण संयुक्तः सधर्म इति निश्चयः ।"

कणादि मुनि के अनुसार –

"यतोभ्यु दयनि श्रेयःससिद्धिः सधर्मः"

मनु स्मृति के अनुसार –

"धृतिः क्षमा, दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रयनिग्रहः,
धीर्विद्या सत्यम्क्रोधो दशकं धर्म लक्षणम् ।"

वैदिक धर्म की विशेषता मुख्यतः दो शब्दों पर आधारित हैं – 'देव' और 'यज्ञ'। देवों की कृपा अनुगृह पाने के लिए मनुष्य को भी देवत्व के गुण अपनाने चाहिए। यहीं ऋग्वैदिक धर्म की शिक्षा है। सृष्टि में सभी प्राकृतिक शक्तियाँ यज्ञ जैसे श्रेष्ठ कर्म को कर रही है। सवर्त्र आदान–प्रदान चल रहा है। मानव समाज में भी यहीं सब आपेक्षित है।

मुख्य विशेषतायें

1. ऋग्वेद के मंत्र अथवा ऋचायें मुख्यतः स्तुतिपरक हैं। ये स्तुतियाँ अग्नि, इन्द्र, सूर्य, वरूण, मित्र आदि देवताओं को अर्पित हैं।
2. इसमें पुरोहितों का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान था। पुरोहित यजमान और देवताओं के बीच मध्यस्थ का कार्य करता था। अतः देव कृपा तथा आर्शीवाद पाने के लिए पुरोहित को संतुष्ट करना आवश्यक था।
3. यह धर्म पलायनवादी और निराशावादी नहीं है। आशा की परम् ज्योति जीवन को प्रकाशमान किये रहती है। इसकी प्रार्थनाओं में पुत्र प्राप्ति, धन प्राप्ति, पशु प्राप्ति, ऐश्वर्य प्राप्ति, यश प्राप्ति, शत्रु विजय तथा अन्य पदार्थों की प्राप्ति की कामना रहती थी। दीर्घायु, सत् जीवि, स्वतंत्र, अक्षत और अविकल होकर जीना अपना अधिकार समझा जाता था।
4. यह धर्म सैद्धांतिक न होकर व्यवहारिक था। इसमें देवों का स्वरूप प्रतीकात्मक था।
5. वैदिक धर्म में प्राकृतिक सत्यों को ही देवता के रूप उपासना की जाती थी। इसमें देव मंदिरों और मूर्ति–पूजा का कहीं उल्लेख नहीं मिलता है।
6. इसमें पशु, पक्षी, वृक्ष, वनस्पति को भी देव रूप में कल्पना की गयी है।
7. इसमें विश्व मैत्री और विश्व बंधुत्व की भावना को बड़े स्पष्ट शब्दों में अभिव्यक्ति मिली है।

ऋग्वैदिक देव शास्त्र के प्रमुख देवता –

1. अग्नि	2. इन्द्र	3. सूर्य
4. वरूण	5. मित्र	6. सविता
7. मरूत	8. अश्विनो	9. पर्जन्य
10. विष्णु	11. रूद्र	12. सोम
13. आदित्य	14. उषस	15. अदिति

भारतीय मनीषियों की देव विषयक अवधारणायें

स्वामी दयानन्द ने अनेक देववाद का विरोध करते हुए अग्नि, इन्द्र आदि को एक ही ईश्वर के विशेष गुण के रूप में परिभाषित किया है। योगी अरविन्द ने समस्त देव परिवार को मानव की भीतरी शक्तियों तथा ईश्वरीय शक्तियों का ही प्रतिरूप माना है। प्राचीन भारतीय भाष्यकार सायण ने अपने वेद मंत्रों को देवताओं की प्राकृतिक शक्ति के रूप में व्याख्या की है। सातवलेकर ने वैदिक देवताओं को पिण्ड (व्यष्टि) और ब्रह्माण्ड (समष्टि) के समानान्तर विद्यमान विभिन्न शक्तियों के रूप में निरूपित किया है। डॉ0 वासुदेव शरण अग्रवाल ने मूल रूप में दो देवताओं अग्नि और सोम की सत्ता को मान्यता देते हुए, इन्द्र को केवल प्राण शक्ति माना है। बी0जी0 रेले के अनुसार सभी देवता मनुष्य के श्नायु संस्थान के विभिन्न चेतना केन्द्रों तथा क्रियाओं के प्रतीक हैं। डॉ0 सम्पूर्णानन्द के अनुसार किसी मंत्र विशेष का जप करने से शक्ति जिस रूप में प्रकट होती है उसको उस मंत्र का देवता कहते है। पाश्चात्य विद्वानों में मैकडानेल, मैक्समूलर, हॉकिन्स, हिल्लेब्राडट आदि ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये हैं।

इस प्रकार हम देखते है कि ऋग्वेद में भारतीय संस्कृति के मूल तत्व विद्यमान हैं।

निष्कर्ष

ऋग्वेद एक काल और एक व्यक्ति की रचना नहीं है। यह क्रमशः विकसित एवं संचित एक विशाल ज्ञान राशि है, जिसकी निमार्ण प्रक्रिया में शताब्दियों की अवधि लगी है तथा अनेक भारतीय मनीषियों ने अपने चिन्तन सहयोग दिया है। एक ओर वैदिक संस्कृति प्रकृति का सम्मान करना सीखाती है तो दूसरी ओर यज्ञ के माध्यम से पर्यावरण को शुद्ध रखने के लिए प्रेरित करती है। इतिहास में एक ऐसा काल जरूर था, जब वेदमंत्र महज यज्ञ में विनियुक्त होने वाले मन्त्र बनकर रह गये थे, परन्तु इस कुछ काल से वेदों के काव्यात्मक सौन्दर्य पर भी विद्वानों की दृष्टि गयी है। ऋग्वेद के वाक्यसूक्त में भाषा की सामर्थ्य का निरूपण किया गया है। 19वीं, 20वीं सदी में भाषा विज्ञान का तुलनात्मक दृष्टि से अध्ययन करने का प्रयास अनेक पाश्चात्य विद्वानों ने किया है, जिसमें वैदिक संस्कृत को मूल आधार बनाया गया है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. सर्वानुक्रमणि
2. वेदार्थ प्रवेशिका पृ0 49
3. निरूक्ति 10.1.8
4. ऋग्वेद 1.164.46
5. वैदिक ग्लास्सरी पृ0 79– 81
6. ऋग्वेद 5.83.4
7. भागवद् पुराण 9.14.48
8. ऋग्वेद 7.63.15
9. ऋग्वेद 7.63.3
10. ऋग्वेद 4.1.4
11. ऋग्वेद 10.173.6
12. ऋग्वेद 10.191.3